A.B.M. college, Golmuri, JSR

2nd year Inter

Hindi ELECTIVE

ch-06 गद्य खण्ड

पाठ का नाम => कच्चा चिट्ठा
लेखक => ब्रजमोहन व्यास

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

Q.1 लेखक कौशाम्बी किस सन में गया था?
Ans सन 1936 में।

Q.2 लेखक ने एक पेड़ के नीचे क्या देखा?
Ans चतुर्मुख भगवान शिव की मूर्ति।

Q.3 लेखक को पसोवा गाँव से आए लोगों की सूचना किसने दी?
Ans चपरासी ने।

Q.4 लेखक ने बुढ़िया को कितने रुपये दिए?
Ans दो रुपये।

Q.5 संग्रहालय को देखने कौन आया?
Ans एक फ्रांसीसी।

लघु उत्तरीय प्रश्नोत्तर

Q.1 "मैं कहीं जाता हूँ तो छूँछे हाथ नहीं लौटता।" से क्या तात्पर्य है? लेखक कौशाम्बी लौटते हुए अपने साथ क्या-क्या लाया?

Ans "मैं कहीं भी जाता हूँ तो छूँछे हाथ नहीं लौटता" का तात्पर्य है कि लेखक जब भी कहीं जाता है तब खाली हाथ वापस नहीं आता। वह उस स्थान से कोई-न-कोई वस्तु लेकर ही लौटता है।

लेखक को पुरातात्विक वस्तुओं का संग्रह करने का शौक है यहाँ कोई विशेष महत्व की चीज तो नहीं मिली पर गाँव के भीतर कुछ बढ़िया मृण्मूर्तियाँ, सिक्के और मनके मिल गए। इसके पर कौशाम्बी लौटा। एक छोटे-से गाँव के निकट पत्थरों के ढेर के बीच, पेड़ के नीचे, एक चतुर्मुख शिव की मूर्ति देखी। वह एक पेड़ के सहारे रखी हुई थी। जैसे उठाने के लिए मुझे ललचा रही हो। अब आप ही बताइए, मैं करता ही क्या? यदि चांद्रायण व्रत करती हुई बिल्ली के सामने एक चूहा स्वयं आ जाए तो बेचारी को अपना कर्तव्य पालन करना ही पड़ता है। पसोवे से जोड़ी चीज मिलने की कमी इस मूर्ति ने पूरी कर दी।

Q.2 "ईमान! ऐसी कोई चीज मेरे पास हुई नहीं तो उसके डिगने का कोई सवाल नहीं उठता। यदि होता तो इतना बड़ा संग्रह बिना पैसा-कौड़ी के हो ही नहीं सकता।" के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है?

Ans लेखक को बोधिसत्व की आठ फुट लंबी एक सुंदर मूर्ति दो रुपए में एक बुढ़िया से प्राप्त हो गई थी। लेखक ने उसे इलाहाबाद नगरपालिका के संग्रहालय में रख दिया था। वास्तव में वह मूर्ति अत्यंत प्राचीन एवं महत्वपूर्ण थी। एक फ्रांसीसी डीलर ने उस मूर्ति को बेचने के लिए लेखक के सामने दस हजार रुपए का प्रस्ताव रखा ताकि लेखक का ईमान डिग जाए, पर लेखक टस से मस नहीं हुआ।

ईमान का अर्थ है धर्म। व्यक्ति अपने जीवन को भली-प्रकार जीने के लिए कुछ नियम-सिद्धांत निर्धारित करता है। परन्तु लेखक ने पुरानी वस्तुओं के संग्रह के लिए अपने कोई नीति, नियम, सिद्धांत निर्धारित नहीं किए हैं। इसीलिए लेखक ने स्वयं को ईमान से रहित अर्थात बेईमान माना है अतः बिना कुछ अधिक खर्च किए यह संग्रहालय बनाकर दिखा दिया। यह संग्रहालय ही उसकी ईमानदारी का जीता-जागता सबूत है।